उपसंहार

कहा जाता है कि स्त्री शक्ति व सृष्टि का आधार हैं, तो फिर समाज में उसे सम-मर्यादा क्यों प्राप्त नहीं होता है ? स्त्री के लिए समानता-सवलीकरण जैसे शब्द तो आज केवल पारिभाषिक तौर पर ही शोभित होकर रह गए हैं, इसके ओट में भरपूर शोषण अब भी जारी है । स्त्री पढ़ाई कर लेती है लेकिन अपने जीवन सबंधी फैसलों पर अब भी दूसरों की ही मनमानी चलती हैं । नौकरी करने की इजाज़त हैं, परंतु पैसों पर उसका अधिकार नहीं । मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों की प्रायः सभी नायिकाएँ शिक्षित हैं; परंतु शिक्षा के प्रयोग में हर बार उन्हें बाधा मिलती हैं । दोनों की नायिकाओं को शादी के बंधन में बंधने के बाद आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं । हर एक प्रयोजन के लिए परनिर्भरशील होना पड़ता था । प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में सम्पूर्ण किया गया हैं । पहले अध्याय में नारी संवेदना की स्वरूप और पृष्टभूमि पर प्रकाश डाला गया हैं । जहाँ भारतीय और पाश्चात्य पृष्टभूमि में गढ़ी जाने वाली नारी अस्मिता की कहानी पर एक नज़र डाली गयी है । साथ ही यहाँ साहित्यिक क्षेत्र में नारी-संवेदना के समावेश की दिशा पर भी आलोकपात किया गया है । द्वितीय अध्याय में दोनों कथाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार करते हुए एक तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की गई है । जहाँ यह परिणाम निकला है कि दोनों ही कथाकारों का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा है; प्रतिष्ठा व सम्मान उन्हें विरासत में नहीं मिली बल्कि यह सब उन्होंने अपने दम पर हासिल किया हैं । उसके बाद तृतीय अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी द्वारा रचित एवं शोध के लिए निर्धारित उपन्यासों की आलोचना की गई हैं, जहाँ उन उपन्यासों के प्रतिपाद्य के साथ उसकी प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया हैं । आलोच्य सभी उपन्यासों में वर्तमान की पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण संदेश निहित हैं । वहाँ भी दोनों कथाकारों के कथाओं में ज़्यादातर समानतायें परिलक्षित हुई; हाँ...भौगलिक परिवेश और परिस्थिति के चलते उनकी नायिकाएँ अलग अलग ढंग से लक्ष्य की ओर आगे बढ़ती हुई दिखाई देती हैं परंतु दोनों

कथाकारों ने तत्कालीन समाज की नारियों की स्थिति को बखूबी निभाया हैं । चतुर्थ अध्याय में सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से नारी संवेदना पर प्रकाश डाला गया हैं । विवेच्य उपन्यासों के विविध पहलूओं को उजागर कर उनमें निहित नारी मन की व्यथा पर विचार किया गया हैं; समाज के खोखलेपन के साथ साथ नारी पर हो रहें अन्याय-अत्याचारों का भी खुलासा किया गया हैं । उनके विश्लेषण से ऐसे अनेक सवाल उठ खड़े हुए जिसका जबाब किसी के पास मौजूद नहीं है !! पंचम तथा अंतिम अध्याय में प्रस्तुत उपन्यासों के मूल नायिकाओं का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया हैं और एक तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है । इस विश्लेषण के उपरांत कुछ महत्त्वपूर्ण बातें सामने आई हैं । सभी नायिकाएँ अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं, कोई शारीरिक शोषण के शिकार है तो किसी पर मानसिक रूप में शोषण किया गया है । आर्थिक दृष्टि से भी यँ सशक्त होना चाहती हैं, पर उन्हें कदम-कदम पर रोक दिया जाता हैं । अपने जीवन के फैसले वह खुद लेना चाहती हैं, राजनीति में वें प्रवेश करना चाहती हैं परंतु समाज की दृष्टि में वह बेशर्म बन जाती हैं । अपनी राय व सुझाव रखने जाती हो 'स्त्री' समझकर उसके बातों को नकार दिया जाता हैं । किसी भी तरह बस उन्हें काबू में रखना ही समाज का उद्देश्य रहा है । बहरहाल, मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी की नायिकाएँ इन सारें मुसीबतों को पार करती हुई अपनी पहचान बनाने में सफल हो जाती हैं । दोनों कथाकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी शक्ति को दिखाने का प्रयास किया हैं ।

निष्कर्ष के रूप कुछ बातें सामने आती हैं; नारी को समाज में स्थान तो दे दिया हैं, परंतु उसकी बागडोर अब भी दूसरों के हाथों में बंधी हुई हैं । स्त्री-विमर्श को लेकर यह भी कहा जाता है कि यह कोई नया विषय नहीं है, यह तो सदियों से चलता आ रहा है । बहुत से लोगों का यह मानना हैं कि पहले भी स्त्री के दुखों का वर्णन होता था, अब भी हो रहा हैं-बात तो एक सी है । लेकिन क्या सच में बात एक जैसी है ? यह तो वैसी ही बात हुई जैसे कि भूख हमें लगी है और खाना कोई दूसरा खा रहा हैं ! चोट हमें लगी है और दर्द से कोई दूसरा कराह रहा हैं । तात्पर्य यही है कि जो व्यक्ति भोगता है, केवल वही उसे अनुभव कर सकता हैं । आप और हम तो केवल

उसका अनुमान ही लगा सकते हैं, तो अब विचारणीय यह है कि अनुमान पर आधारित कथाओं को स्त्री-विमर्श के कोटि में रखना कहाँ तक सम्मत होगा ? पहले की रचनाओं में स्त्री असहाय और मौन खड़ी रहती थी, पर आज वे प्रतिवाद करती है । छोटी छोटी बातों पर घबराकर वे रोती नहीं हैं बल्कि उसका समाधान निकालती हैं । प्रस्तुत शोध प्रबंध में मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के उपन्यासों के माध्यम से इन्हीं विषयों की चर्चा की गई हैं । दोनों कथाकारों ने नारी संवेदना को अत्यंत वास्तविक और हृदयस्पर्शी रूप में चित्रित किया है और साथ ही नारी को समाज में प्रतिष्ठित कराने का सफल प्रयास किया हैं । यद्यपि दोनों कथाकार भारत के दो भिन्न प्रांत को प्रतिनिधित्व करती हैं, दो भिन्न भाषाओं में लिखती हैं, फिर भी उनकी भावनाओं में समानता परिलक्षित होती हैं । दोनों की कथाओं में नारी की समस्याओं के साथ समाधान भी खोजे गए हैं; आख़िर हैं तो दोनों ही शक्ति का ही अंश...अस्तित्व की यह लड़ाई तो कबकी शुरू हो चुकी है; अपनी शक्ति को पहचान कर नारी को बस अब निरंतर आगे बढ़ने रहना है ।